International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 4, April 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अनुवाद कर्म में भाषा, संस्कृति एवं विषयबोध की सावधानियां

Co-Authored by - Mahendra singh &LalitaRatanoo

'अनुवाद' का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है - पुनः कथन ; एक बार कही हुई बात को दोबारा कहना। इसमें अर्थ की पुनरावृत्ति होती हैं, शब्द (शब्द रूप) की नहीं। 'ट्रांसलेशन' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है 'परिवहन' अर्थात् एक स्थान-बिन्दु से दूसरे स्थान-बिन्दु पर ले जाना। यह स्थान-बिन्दु भाषिक पाठ है। किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत् प्रस्तुत करना अनुवाद है। इस विशेष अर्थ में ही 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय सुनिश्चित है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है , वह 'मूलभाषा' या 'स्रोतभाषा' है। उससे जिस नई भाषा में अनुवाद करना है, वह 'लक्ष्य भाषा' है। इस तरह, स्रोत भाषा में प्रस्तुत भाव या विचार को बिना किसी परिवर्तन के लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करना ही अनुवाद है।

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा तक की इस यात्रा में अनुवादक को कई बातों का ध्यान रखना होता है। चूंकि परिभाषा की अनिवार्य शर्त विचार-विनिमय है। अतः अनुवादक एक भाषा के पाठ को अन्य भाषा या सांस्कृतिक क्षेत्र में पहुंचने का कार्य करता है। इसलिए उसका यह प्राथमिक कर्तव्य बनता है कि लक्षित पाठक वर्ग तक मूल पाठ की संवेदना को बिना खंडित किए पहुंचाने का प्रयास करें। कोई भी अनुवादक मूल पाठ में उपस्थित भावों को कितने भरोसे से पेश कर सकता है और उसकी समग्रता को कितने सामर्थ्य से प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया है , उसकी सफलता इसी बात पर निर्भर करती है।

अनुवादक के सामने जब दो संस्कृतियों की भाषा-इतर वास्तविकताओं या शाब्दिक मानचित्र में अंतर की समस्या आती है तो वह दोनों के बीच संगति बैठाने के लिए नाना प्रकार की पद्धतियों का सहारा लेता है। वह शब्द उधार लेता है , व्याख्या करता है, शब्दानुवाद करता है। शब्द-विशेष के लिए स्थानापन्न खोजता है , शब्द-निर्माण करता है। कभी-कभी कुछ छोड़ या जोड़ देता है। इस संदर्भ में संदर्भ में पूरनचंद टंडन &हरीश कुमार सेठी अपनी पुस्तक *अनुवाद के*

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 4, April 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

*विविध आयाम*में कहते है कि "अनुवाद में भाषा का दोहरा जोखिम होता है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के मध्य खड़ा अनुवाद एक विक्रेता की तरह तुला थामे कीमत (अर्थात् मूल) के बराबर वस्तु तोलने का प्रयास करता है।"[1]

तोलने की इस प्रक्रिया में अनुवादक कई चुनौतियों का सामना करता है। कुछ विदेशी प्रकृति के शब्द जैसे :- Academy, Technique, comedy, Tragedy आदि के समानांतर भारतीय परंपरा में कोई भी शब्द नहीं है इसलिए इस तरह के शब्दों का भारतीयकरण कर दिया जाता है जैसे क्रमशः - अकादमी , तकनीक, कामदी, त्रासदी आदि। अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा के बहुअर्थी शब्दों को हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में लाया जाता है तो एक समस्या यह भी पैदा होती है कि अनुवाद में इनके कौनसे समानार्थी शब्दों को ग्रहण किया जाए। उदाहरण के तौर पर अंग्रेजी के circle शब्द को ही ले लिया जाए, इसके कई अर्थ होते है जैसे - वृत्त, घेरा, दायरा, चक्र, ग्रह कक्षा, परिक्रमा, अंचल, परिमंडल, क्षेत्र, मंडली, समाज आदि। इस तरह अनुवाद प्रक्रिया के दौरान अनुवादक को बहुअर्थी शब्दों के अनेक अर्थों में से एक सटीक अर्थ को चुनने की प्रक्रिया में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस संदर्भ में हरीश कुमार सेठी का कहना है कि "उदाहरण के लिए, कंप्यूटर विषय के संदर्भ में अगर हम 'माउस', 'हार्डवेयर', 'प्रोग्राम' आदि। जैसे शब्द प्रयुक्त करें तो वे पूरी की पूरी एक निश्चित अवधारणा का बोध कराते हैं। इस प्रकार की शब्दावली की यह भी विशेषता होती है कि एक अवधारणा के संदर्भ में एक ही शब्द प्रयुक्त किया जाता है जबकि सामान्य जीवन व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त शब्दों में अर्थ के धरातल पर कहीं विस्तार और कहीं संदिग्धता परिलक्षित की जा सकती है। कहने का अभिप्राय यह है कि एक ही सामान्य शब्द के कई अर्थ होते हैं , जबकि ज्ञान के क्षेत्र में एक शब्द के जरिए अर्थ की सुनिश्चितता का विशेष महत्व है।"[2]

जब विकसित देशों की रचनाएं अनुवाद के माध्यम से अल्पविकसित देशों या तीसरी दुनिया में प्रवेश करती है तो अपने साथ कई सारे वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दों को साथ लेकर आती है। ये शब्द न ही तीसरी दुनिया के अतीत से संबंधित होते है और न ही वर्तमान जीवन शैली से अर्थात ये उनके लिए एकदम नवीन होते हैं जैसे- Mobile, Telephone, Email, Internet, Computer, Rail, आदि। क्योंकि ये शब्द विकसित देशों में भी आधुनिक वैज्ञानिक विकास से जुड़े हुए थे। अतः ये शब्द उनके लिए भी नवीन थे। अनुवादक इस तरह के शब्दों को तीसरी दुनिया की संस्कृति में पचाने के लिए हुबहू उतार देता है। अतः कहा जा सकता है कि

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 4, April 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

computer को 'संगणक' और Rail को 'लोहपथगामिनी' कहने की बजाय मूल शब्द ही अधिक न्यायोचित होगा। इस विषय में निर्मला जैन अपनी पुस्तक *अनुवाद मीमांसा* में कहती है कि "परिभाषिक शब्दावली का शाब्दिक अनुवाद करने या गढ़ने के बजाय , आयातित विचार, वस्तु, आविष्कार या अवधारणा के साथ शब्दों का आयात भी कर लिया जाना चाहिए।"[3]

इन सब बातों के इतर अनुवादक को अनुवाद के लिए लक्ष्य भाषा और श्रोत भाषा के चुनाव को लेकर भी सावधान रहना होता है। आधुनिक काल में भारत में विदेशी भाषाओं से हिंदी में रचनाएं अनूदितहोना प्रारम्भ होने लगी तब लक्ष्य भाषा के रूप में हिंदी के चुनाव के पीछे भी बहुत बड़ी सोची-समझी रणनीति थी। उस दौर के भारतीय विद्वानों पर यह दबाव था कि पूरे देश से किसी एक ऐसी भाषा को चुना जो साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध होने के साथ-साथ विभिन्न खण्डों में विभक्त भारत को एक सूत्र में बांध सकें और स्वतंत्रता आंदोलन की आवाज बन सके। उन्हें यह संभावना हिंदी में नजर आई। इस संदर्भ में और्सीनी , फ्रंचेस्का का कहना है कि"उन्नीसवीं सदी में हिन्दी के अग्रदूतों ने पहले ही इस बात को समझ लिया था कि एक सार्वजनिक भाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने, सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार के विषयों पर विचारों को फैलाने और बहस शुरू करने और साहित्य को रसिकों-मित्रों के एक छोटे-से दायरे के बाहर एक अस्पष्ट रूप से परिभाषित 'हिन्दू-हिन्दी पाठक वर्ग' के बीच ले जाने के लिए पत्र-पत्रिकाएँ एक अहम ज़रिया हैं।"[4]

भारत कोई देश एक देश नहीं बल्कि एक संस्कृति और एक जीवन शैली है , जो हजारों सालों से इस विशाल भूखंड पर अनवरत रूप से एक जीवंत संस्कृति के रूप में विद्यमान है। भारत भौगोलिक विविधताओं से संपन्न देश है, अतः भौगोलिक अनुकूलन की प्रक्रिया में संस्कृति के कई आंचलिक रूप विकसित हो गए , जिन्हें समष्टि के रूप में भारतीय संस्कृति के रूप में अभिहित किया जाता है। किसी भारतीय भाषा की आंचलिक रचना का अनुवाद हिन्दी या अन्य भारतीय भाषा में होने पर सांस्कृतिक व ऐतिहासिक साम्यता के बावजूद भी भौगोलिक और आंचलिक भिन्नता की वजह से कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे :- बिहार , राजस्थान, गुजरात के कई क्षेत्रों में जेठ और ससुर से पर्दा किया जाता है लेकिन केरल , तमिलनाडु और पहाड़ी क्षेत्रों में जेठ के साथ एक जीवंत संवाद की परंपरा कायम है। इसके अतिरिक्त आंचलिक क्षेत्र की वनस्पति , खानपान, वेशभूषा और उत्सव त्योहार आदि कई बातें

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 4, April 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ऐसी होती है, जिन्हें हुबहू अनुदित नहीं किया जा सकता। इस समस्या को अनुवाद विज्ञान की परिभाषिक शब्दावली मेंअननुवाद्यताकहा जाता है। अतः उपर्युक्त क्षेत्रीय विशिष्टताओं को खंडित किए बिना मूल पाठ के भाव को अनुवाद में पुनः अभिव्यक्त कर पाना अनुवादक के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस विषय मेंब्रायन जेम्स बेयर अपने लेख ‘*From cultural Translation to Untranslatability*’ में कहते हैं कि “हमें अनुवाद की प्रक्रिया में "सटीकता" तथा "सत्य" को और अधिक प्रभावी ढंग से स्थानांतरित करने के लिए ‘अर्थ के बारे में कम शब्दों में सोचना’ सीखना चाहिए, जो एक ही सांस्कृतिक अंचल के विभिन्न "वक्ताओं" के बीच अंतर और शक्ति की दृढ़ता को हमेशा पहचानते हुए सांस्कृतिक संचार में सहायक होता है। ”[5]इस प्रक्रिया में उत्कृष्ट अनुवाद कौशल की आवश्यकता होती है। अनुवाद कौशल में संस्कृति के वैशिष्ट्य को मद्देनजर रखते हुए डॉ देवशंकर नवीन अपनी पुस्तक *अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य*में कहते हैं कि "किसी पाठ का अनुवाद करना , केवल उनकी शब्दावलियों , क्रियापदों और संदेशों का उल्था भर नहीं होता , बल्कि उस पूरी प्रक्रिया में भाषा वैज्ञानिक व्याकारणिक और कोशीय उपस्करों के उपयोग के अलावा एक अदृश्य काम होता रहता है , वह है मूल पाठ की संस्कृति का अनुवाद।"[6]

मूल पाठ की संस्कृति के अनुवाद की समस्या तब और भी बड़ी हो जाती है जब आंचलिक भाषा की रचना का अनुवाद अंग्रेजी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली व स्पेनी आदि वैश्विक भाषाओं में हो। इन भाषाओं के क्षेत्रों में भौतिकवाद के साथ साथ मानववादी दृष्टि अधिक हावी रही है। जबकि भारतीय संस्कृति में आध्यत्मवादी और मानवतावादी दृष्टि का बोलबाला रहा है। इस कारण से भारतीय समाज की संरचना पाश्चात्य समाज से काफी भिन्न है। इन सबके अतिरिक्त भारत की जातीय संरचना सम्पूर्ण विश्व में अनूठी है , अर्थात् केवल भारत में ही है। अतः जब दुनिया के किसी भी देश ने इस तरह की व्यवस्था को कभी देखा ही नहीं तो इस व्यवस्था से निकलने वाली रचना को समझने में उन्हें काफी दिक्कत होगी। उदाहरण के रूप में विजयदान देथा की कहानियों को लिया जा सकता है , जहां पर पात्रों के विशेष नाम न होकर कहानियों में वे केवल जातीय चरित्र के रूप में आते हैं। अतः इस तरह की कहानियों का अनुवाद करने के लिए अनुवादक को राजस्थान व भारत की जातीय संरचना और राजस्थान की सामंतवादी व्यवस्था में जातियों की स्तिथि व भूमिका के विषय में जानकारी होनी चाहिए। इन सब बातों को केंद्र में रखकर किए

गए अनुवादों के बावजूद भी बिज्जी के अनुवादों को समझने में विदेशी पाठकों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस तरह की कठिनाइयों संदर्भ में निर्मला जैन कहती है "अनुवाद भाषाओं का नहीं संस्कृतियों का होता है। इसलिए किसी अनुवाद का कठिन या सरल होना संबद्ध संस्कृतियों के बीच निकटता की मात्रा, अर्थात् पारस्परिक समानता पर निर्भर रहता है।"[7]

अनुवाद के संदर्भ में कोई भी भाषा केवल सार्थक अर्थ प्रदान करने वाले शब्दों के समूह तक ही सीमित नहीं होती। बल्कि मूल पाठ को अपनी पूरी सांस्कृतिक छटाओं के साथ लक्षित भाषा की संस्कृति में अभिव्यक्त कर पाने में ही अनुदित पाठ की सार्थकता सिद्ध होती है। राजस्थानी संस्कृति में मूंछ को प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है , लेकिन अरब देशों की संस्कृति में मूंछ का कोई महत्त्व नहीं है क्योंकि वहां का धर्म मूंछ को साफ रखने में विश्वास रखता है। भारतीय संस्कृति के तीज त्योहार , परंपराएं, वैवाहिक संस्कार व परंपराएं , मेले, लोक देवता, खानपान, वनस्पति आदि को लक्षित पाठ में घुला मिला पाना बहुत ही अधिक श्रम साध्य कार्य है। इस समस्या के निवारण के लिए समतुल्यता का सिद्धांत और संप्रेषणीयता का सिद्धांत आदि पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है।

इन सब बातों को जान लेने के पश्चात भी एक प्रश्न तो अनुत्तरित ही रह गया कि अनुवाद क्यों किये जाते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर की खोज में कई बिंदु निकलकर सामने आते हैं , जैसे-किसी देश की भाषा व संस्कृति को समझने के लिए, किसी देश और संस्कृति के गौरवशाली अतीत को वर्त्तमान में भी प्रासंगिक बनाए रखने के लिए या किसी संस्कृति को बेहतर या हीनतर प्रमाणित करने के लिए, यश प्राप्ति के लिए तथा धन प्राप्ति के लिए भी अनुवाद किये जा सकते हैं, जैसा कि अंग्रेजों ने भारत आगमन के पश्चात् किया और उसके प्रतिकार में भारतीय लेखकों द्वारा भी किया गया।प्रो. देवशंकर नवीन इस संबंध में लिखते हैं कि "ध्यातव्य है कि सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में अपने मान-सम्मान के लिए फिरंगियों की क्रूरता का सामना कर रहे भारतीय राष्ट्र भक्तों की त्रासद पराजय के बाद यह वह दौर था , जिसमें भाषा और संस्कृति की निजता का महत्त्व हर भारतीय समझने लगा था। अनुवाद के माध्यम से ही सही, पर हर किसी को अपने पौराणिक ग्रंथों , प्राचीन साहित्यों और विराट भारत की

साहित्यिक धरोहरों के साथ-साथ विश्वफलकीय ज्ञान से परिचित होना जरूरी लगने लगा था।"[8] इस प्रक्रिया में दूसरा प्रश्न यह खड़ा होता है कि किसी खास समय में अनुवाद के लिए विशेष शैली या क्षेत्र से ही रचनाएं क्यों चुनी जाती है ? जैसे रीतिकाल में संस्कृत की कव्यशास्त्रीय रचनाओं को ही ब्रजभाषा में सरलानुवाद या भावानुवाद के लिए क्यों चुना गया ? या हिंदी क्षेत्र में पुनर्जागरण के समय भारतीय महान अतीत के गौरवान्वित करने वाले क्षणों को ही क्यों चुना? इस तरह के शीर्षकों के चयन के पीछे जो मानसिकता कार्य कर रही होती है उसे अनुवाद की शब्दावली में 'अनुवाद की राजनीती' कहते हैं। अतः समय की मांग या अनुवाद की राजनीति को विषयबोध के लिए प्रथम कारक माना जा सकता है। अनुवाद की राजनीति को मद्देनजर रखते हुए ऐसी रचना को अनुवाद के लिए चुनना चाहिए , जो समकालीन समय में हमारे लिए प्रासंगिक हो। भारत में पिछले कुछ समय से वर्ग-भेद और जाति-भेद को लेकर काफी जागरूकता बढ़ी है। इसलिए दक्षिण अफ्रीका तथा अन्य अश्वेत लेखकों की रचनाओं के अनुवाद अधिक होने लगे हैं , जैसे :- न्गुगी वा थ्योंगो , नेल्सन मंडेला की रचनाएं आदि। इस विषय में निर्मला जैन ने कहा "पिछली सदी से तीसरी दुनिया के देशों की रुचि यदि दक्षिण अफ्रिका तथा प्रवासी अश्वेत रचनाकारों में तेजी से बढ़ी है , तो इसका गहरा संबंध सामाजिक वर्ग-भेद और दलित समस्या के प्रति बढ़ी जागरूकता से है।"[9]

अनुवादक को विषय चयन के दौरान स्वयं की रुचि व सामर्थ्य का पूरा-पूरा बोध होना चाहिए। अगर अनुवादक अर्थशास्त्र की किसी पुस्तक को अनुवाद के लिए चुनता है तो उसकी अर्थशास्त्र में रुचि भी होनी चाहिए तथा उस विषय और भाषा का गहरा ज्ञान होना चाहिए। अर्थात् कला के क्षेत्र में रुचि रखने वाले इंसान से विज्ञान के क्षेत्र की रचना का अनुवाद करवाया जाएगा तो इस बात की संभावना कम होगी कि उत्कृष्ट कोटि का अनुवाद हो पाएगा। वैसे अनुवाद अंतरानुशनिक विषय है इसलिए अनुवादक को हर समय अपने ज्ञान विस्तार का प्रयास करते रहना चाहिए।

विषय चयन के दौरान अनुवादक इस बात का भी ध्यान रखता है कि जिस क्षेत्र में उसकी परवरिश हुई है, वह क्षेत्र जिन जानकारियों से वंचित है, उसे जानकारी के दायरे के भीतर लाने का प्रयास करना चाहिए। जैसे कि राजस्थानी भाषा में रसूल हमजातोव , चेखब और टॉलस्टाय को सही से अनुदित नहीं किया गया है या राजस्थान का लोक उनसे परिचित नहीं है तो

अनुवादकों को इस बात को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त रचनाकारों को राजस्थानी में अनुदित करना चाहिए।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि एक अच्छा अनुवादक अनुवाद कर्म के दौरान भाषा और संस्कृति की प्रेषणीयता की समस्या को न्यूनतम कर सकता है। सांस्कृतिक सम्प्रेषणीयता की समस्या के समाप्त होने अनुवाद वह माध्यम बन सकता है , जो इस बहुभाषी विश्व को अनेकताओं के बावजूद भी एकता के सूत्र में बांधकर रख सकता है। सृष्टि की सर्जना से ही अनुवाद संपूर्ण मानवता को जोड़ने के लिए एक सेतु का कार्य करते आया है और अपने भीतर असीम संभावनाओं को समेटे हुए यही कार्य सभ्यता के अंतिम बिंदु तक करता रहेगा।

सन्दर्भ सूची :-

[1]टण्डन, पूरनचंद&हरीश कुमार सेठी, अनुवाद के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2017, मुद्रित, पृष्ठ -64

[2]सेठी, हरीश कुमार, वर्ष-2017, हिंदी के विकास में कोशों की भूमिका और महत्त्व,अनुसृजन-अंक-5, 82-91, जनवरी-जून 2017(संयुक्तांक), पृष्ठ-85,

[3] जैन, निर्मला, अनुवाद मीमांसा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2018, पृष्ठ– 48

[4]और्सीनी, फ्रंचेस्का, *हिन्दी का लोकवृत : 1920-1940*,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ -72

[5]Baer, Brian James(2020), From cultural Translation to Untranslatability, Department of English and Comparative Literature, American University in Cairo, page- 141-142

We should perhaps learn to think of meaning less in terms of "accuracy" and "truth" and more in terms of effective exchange—a process of translation, which facilitates cultural communication while always recognizing the persistence of difference and power between different "speakers" within the same cultural circuit
source - Jstor - link- https://www.jstor.org/stable/26924869?seq=1

[6] नवीन, देवशंकर, अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य, प्रकाशन विभाग, प्रथम संस्करण नई दिल्ली, 2016, मुद्रितपृष्ठ- 128

[7]जैन, निर्मला, अनुवाद मीमांसा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2018, पृष्ठ-53

[8]नवीन, देवशंकर, अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य, प्रकाशन विभाग, प्रथम संस्करण नई दिल्ली, 2016, मुद्रित पृष्ठ-121

[9]जैन, निर्मला, अनुवाद मीमांसा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2018, पृष्ठ-52

सहायक ग्रन्थ-सूची

1. और्सीनी, फ्रंचेस्का, हिन्दी का लोकवृत : 1920-1940, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. जैन, निर्मला, अनुवाद मीमांसा , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2018, मुद्रित
3. टण्डन, पूरनचंद&हरीश कुमार सेठी , अनुवाद के विविध आयाम , तक्षशिला प्रकाशन , नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2017, मुद्रित
4. नवीन, देवशंकर, अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य , प्रकाशन विभाग, प्रथम संस्करण नई दिल्ली , 2016, मुद्रित
5. भाटिया, कैलाशचंद्र, अनुवाद स्वरूप और प्रक्रिया , तक्षशिला प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण, 2004, मुद्रित
6. सेठी, हरीश कुमार, वर्ष-2017, हिंदी के विकास में कोशों की भूमिका और महत्त्व ,अनुसृजन- अंक-5, 82-91, जनवरी-जून 2017(संयुक्तांक)
7. Baer, Brian James(2020), From cultural Translation to Untranslatability, Department of English and Comparative Literature, American University in Cairosource - Jstor - link-https://www.jstor.org/stable/26924869?seq=1

Co-Authored by - Mahendra singh &LalitaRatanoo

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 4, April 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A